**पाठ 6** **नवम्बर 4-10**

# आदम और यीशु

**सब्त अपराह्न** **नवम्बर 4**

**इस सप्ताह के अध्ययन के लिए पढ़ें: रोमियों 5**

**याद वचन:** *"अत: अब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें, जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुँच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमंड करें ।"* (रोमियों 5:1, 2)

पौलुस ने इस तर्क को स्थापित किया है कि धार्मिकता या परमेश्वर के स्वीकार्य, केवल यीशु में विश्वास के द्वारा आती है। मसीह, केवल उसकी धार्मिकता काफी है जो, हमें परमेश्वर के सामने खड़े होने का अधिकार देती है। उस महान सत्य पर स्थिर होकर, पौलुस अब इस विषय पर और अधिक वर्णन करता है। यह दर्शाते हुए कि उद्धार विश्वास के द्वारा होना है और कर्मों के द्वारा नहीं, उनके लिये नहीं जो अब्राहम की तरह "धर्मी" हैं, पौलुस उस बड़ी तस्वीर को देखने के लिये पीछे की ओर लौटता है - जिसने पाप और पीड़ा और मृत्यु को उत्पन्न किया, और किस प्रकार मसीह में समाधान मिलता है और उसने मानव जाति के लिये क्या किया।

आदम, एक व्यक्ति के पतन के द्वारा मानवता ने निंदा, संक्रमण और मृत्यु का सामना किया; यीशु, एक व्यक्ति की जय के द्वारा सारा संसार परमेश्वर के सामने नये चरण में खड़ा हुआ। यीशु में विश्वास के द्वारा, उनके पापों और दण्डों का रिकार्ड मिट सकता, क्षमा हो सकता, और हमेशा के लिये माफी हो सकती थी।

पौलुस आदम और यीशु में तुलना करता है, वह दिखाता है कि किस प्रकार मसीह आदम के किये पाप को नष्ट करने के लिये आया, और दिखाया कि विश्वास के द्वारा आदम के पाप के पीड़ितों को उद्धारकर्त्ता, यीशु के द्वारा बचाया जा सकता था। इन सभी का आधार मसीह का क्रूस है और उसकी एवजी (दूसरे के स्थान पर) मृत्यु है - जो हरेक मानव-जाति, यहूदी या अन्यजाति के लिये रास्ता खोलता है, ताकि मसीह यीशु के द्वारा बचाये जायें, जिसने अपने खून के द्वारा सभी के लिये धार्मिकता लेकर आया, जो उसे ग्रहण करते हैं।

निश्चित रूप से यह एक विषय है जिसे विस्तार दिया जा सकता है, क्योंकि यह हमारे सभी आशाओं का आधार है।

**रविवार** **नवम्बर 5**

**विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरा**

**पढ़ें: रोमियों 5: 1-5.** नीचे की पंक्तियों में पौलुस के संवाद का सार प्रस्तुत करें। आप अभी स्वयं के लिये उससे क्या ले सकते हैं?

"धर्मी होना" का शाब्दिक अर्थ "धर्मी होकर" है। ग्रीक में क्रिया, कर्म को पूरा हुआ पेश करता है। हम धर्मी घोषित हुए हैं या धर्मी ठहराये गये हैं, व्यवस्था के किसी कर्म के द्वारा नहीं पर हमारे यीशु को ग्रहण करने के द्वारा। सिद्ध जीवन जिसे यीशु ने इस पृथ्वी पर जीया, उसका संपूर्ण व्यवस्था पालन, हमें प्रदान किया गया।

इस प्रकार हमारे सारे पाप यीशु पर डाले गये। परमेश्वर ने मान लिया कि यीशु ने वे पाप किये, हमने नहीं, और इस रीति से हम दण्ड से बच सकते हैं जिसके हम हकदार हैं। हमारे खातिर वह दण्ड मसीह पर पड़ा, ताकि हमें स्वयं इसका कभी सामना न करना

पड़े। और क्या ही महिमामय समाचार पापियों के लिये हो सकता है?

रोमियों 5:3 में ग्रीक शब्द "महिमा" के रूप में अनुवाद हुआ है जो रोमियों 5:2 में "आनन्द" के रूप में अनुवाद हुआ है। यदि यह रोमियों 5:3 में भी (जैसा कुछ संस्करणों में है) "आनंद" अनुवाद होता तो रोमियों 5:2 और रोमियों 5:3 के बीच का संबंध और स्पष्ट दिखाई देता। धर्मी लोग क्लेश में आनन्द करते हैं क्योंकि उन्होंने अपना विश्वास और आशा यीशु मसीह में स्थिर किया है। उन्हें पक्का विश्वास है कि परमेश्वर सब वस्तुओं को भलाई के काम करेगा। वे मसीह के निमित्त क्लेशित होने में सम्मान का अनुभव करेंगे। (देखें 1 पत० 4:13)

**रोमियों 5:3-5 में प्रगति को भी ध्यान दें।**

- ***धैर्य*** - ग्रीक शब्द इस प्रकार अनुवादित हुआ है जैसे ह्यूपोमोन (hupomone) का अर्थ "अविचल सहनशील"। यह एक प्रकार की सहनशीलता है कि क्लेश उसमें दिखाई देता है जो विश्वास को कायम रखता है और जो उम्मीद के दर्शन को नहीं खोता, जिसकी मसीह में उम्मीद है परीक्षाओं और क्लेश में भी जो कभी-कभी जीवन को अति दुखदायी बना देता है।
- ***अनुभव*** - ग्रीक शब्द इस प्रकार अनुवाद हुआ है जैसे डोकिम (Dokime) का शब्दिक अर्थ "स्वीकारे जाने का गुण"; इसलिये "चरित्र" या और खास रूप "स्वीकृत चरित्र"। वह जो क्लेशों का धैर्यपूर्वक सामना करता है, स्वीकृत चरित्र को विकसित करता है।
- ***आशा*** - सहनशीलता और स्वीकृति स्वाभाविक रूप से आशा को जन्म देती है - आशा जो यीशु मसीह में पायी जाती है और उसमें उद्धार की प्रतिज्ञा। जब तक हम यीशु के विश्वास, पश्चात्ताप और आज्ञाकारिता में टिके रहते हैं, हमारे पास आशा करने के लिये सब कुछ है।

आपके संपूर्ण जीवन में वह कौन-सी चीज है जिसे आप किसी अन्य से अधिक चाहते (आशा करते) हैं? वह आशा यीशु में कैसे परिपूर्ण होगी? या यह हो सकती है? यदि नहीं तो, क्या आप आश्वस्त हैं कि आप बहुत अधिक उम्मीद इसमें करते हैं?

**सोमवार** **नवम्बर 6**

**अब तक पापीगण**

**पढ़ें: रोमियों 5:6-8**। परमेश्वर के चरित्र के विषय में यह अनुच्छेद हमें क्या बतलाता है, और ये हमारे लिये क्यों इतनी आशाओं से भरपूर हैं?

जब आदम और हवा ने शर्मनाक एवं अक्षम्यरूप से ईश्वरीय अपेक्षा का उल्लंघन किया, परमेश्वर ने सामंजस्य की ओर एक कदम आगे बढ़ाया। तब से, परमेश्वर ने उद्धार के रास्ते को उपलब्ध कराने की पहल की है और पुरुषों एवं महिलाओं को इसे ग्रहण करने के लिये आमंत्रित किया है। "परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा" (गला० 4:4)।

रोमियों 5:9 कहता है कि हम परमेश्वर के क्रोध से यीशु के द्वारा बचाये जा सकते हैं। हम कैसे समझते हैं कि उसका क्या तात्पर्य है?

मिस्र से उनके रवानगी की पूर्व संध्या को इस्राएलियों के दरवाजे के चौखटों पर खून के छींटें ने पहिलौटों को उस क्रोध से बचाया जो मिस्र के पहिलौटों पर पड़ा। इसी रीति से यीशु मसीह का खून गारंटी देता है कि वह जो पवित्र ठहराया गया है और उस हैसियत को बनाये रखता है, बचाया जाएगा। जब परमेश्वर का क्रोध युगांत में पाप को

नाश करेगा।

कुछ लोग इस विचार पर संघर्ष करते हैं कि प्यारा परमेश्वर क्रोधी है। परन्तु यह संक्षिप्त रूप से उसके प्रेम के कारण है कि वह क्रोध विद्यमान है। पाप के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध क्यों नहीं हो सकता है जो इस संसार को प्रेम करता है? क्या वह हमारे साथ उदासीन है, वह परवाह नहीं करता जो यहाँ पर घटित होता है। संसार के चारों ओर देखें और दृष्टिपात करें कि पाप ने उसकी सृष्टि में क्या किया है। परमेश्वर किस प्रकार ऐसी बुराई और तबाही के खिलाफ क्रोधी नहीं हो सकता?

आनन्द करने के लिये हमें दूसरे क्या कारण दिये गये हैं? रोमि० 5: 10, 11. रोमियों 5:10 में कुछ टीकाकारों ने जीवन के संदर्भ को देखा है जिसे मसीह ने इस पृथ्वी में जीया, जिस दौरान उसने एक सिद्ध चरित्र पेश किया जिसे वह अभी हमें प्रदान करना चाहता है। यद्यपि यह निश्चित रूप से वह है जो मसीह का जीवन ने प्राप्त किया, पौलुस यथार्थ पर जोर देता लगता है। चूँकि मसीह मरा, वह फिर जी उठा और सदा के लिये जीवित हैं (देखें इब्रा० 7:25), क्योंकि वह जीवित है हम बचाये गए हैं। यदि वह कब्र ही में रहता, हमारी आशाएँ उसी के साथ नाश हो जातीं। रोमियों 5:11 इस तर्क के साथ आगे बढ़ता है कि हमें परमेश्वर में आनंदित होना है, और यह इसलिये कि जो यीशु ने हमारे लिये हासिल किया है।

**मंगलवार** **नवम्बर 7**

**पाप के द्वारा मृत्यु**

मृत्यु एक अंतिम शत्रु है। जब परमेश्वर ने मानव जाति की सृष्टि की, वह ऐसी रचना की कि इसके सदस्यों को सदा काल के लिये जीवित रहना है। कुछ अपवादों को छोड़ मनुष्य मरना नहीं चाहते; और जो करते हैं महान व्यक्तिगत रोष और क्लेश के बाद ही ऐसा करते हैं। मृत्यु हमारे बहुत ही मूल स्वभाव के खिलाफ जाती है। और यह आरंभ से है हम सर्वदा जीवित रहने के लिये सृजे गये। मृत्यु से हमें अनजान रहना था।

पढ़ें: रोमियों 5:12 पौलुस यहाँ पर क्या वर्णन कर रहा है? यह क्या व्याख्या करता है?

टीकाकारों ने बाइबल के इस अनुच्छेद पर अन्यथा अधिक बहस की है। संभवत: कारण है, जैसे *एस०डी०ए० बाइबल कॉमेंटरी, वॉल्यूम 6, पेज 529* में जिक्र किया गया है, कि ये टीकाकार "पौलुस के अभिप्राय की अपेक्षा दूसरे उद्देश्यों हेतु अनुच्छेद के इस्तेमाल का यत्न करते थे।"

एक बिंदु जिसपर वे बहस करते हैं: किस प्रकार आदम का पाप उसकी भावी पीढ़ी पर चला गया? क्या आदम के वंशज उसके पाप के हिस्सेदार हैं,या क्या वे अपने पापों के कारण परमेश्वर के सामने दोषी हैं? समूह ने इस अवतरण से उस प्रश्न के उत्तर पाने का प्रयास किया है, लेकिन वह मुद्दा नहीं है जिसपर पौलुस चर्चा कर रहा था। उसके मन में बहुत से अन्य विषय थे। वह पुन: जोर दे रहा है जिसे उसने पहले वर्णन किया था; "क्योंकि सबने पाप किया है" (रोमि० 3:23)। हमें पहचानने की जरूरत है कि हम पापी हैं, क्योंकि वही एकमात्र रास्ता है जिसे हम उद्धारकर्त्ता की जरूरत को महसूस करेंगे। यहाँ पर पौलुस पाठकों को महसूस कराने की कोशिश कर रहा था कि पाप कितना बुरा है और इसने आदम के द्वारा संसार में क्या लाया। तब वह दिखाता है कि आदम के पाप के द्वारा हमारे संसार में जो दुख आया यीशु मसीह ही उसका एकमात्र उपाय है।

अब तक, यह अवतरण केवल समस्या की बात करता है, आदम में मृत्यु - समाधान की नहीं, जो मसीह में जीवन है। सुसमाचार के बहुत ही आनंदमय पहलुओं में

से एक है कि मृत्यु जीवन में समा चुका है (जीवन ने मृत्यु को निगल लिया है)। यीशु कब्र के प्रवेश द्वार से होकर गुजरा और इसके बंधनों को तोड़ डाला। वह कहता है, "मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीवित हूँ; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं" (प्रका० 1:18), क्योंकि यीशु के पास कुंजियाँ हैं, शत्रु अपने शिकार (पीड़ित) को कब्र में अब और नहीं रोक सकता।

मृत्यु के दुख और वास्तविकता के साथ आपका क्या तजुर्बा रहा है? ऐसे निर्दयी शत्रु के मुकाबले हमें क्यों हमारे स्वयं की अपेक्षा किसी महानता में आशा होनी चाहिए या किसी और महानता में जो यह संसार प्रदान करता है?

**बुधवार** **नवम्बर 8**

**आदम से मूसा तक**

**पढ़ें: रोमियों 5: 13, 14.** पौलुस यहाँ पर व्यवस्था के विषय हमें क्या सिखा रहा है?

पौलुस यहाँ पर किस विषय में बातें कर रहा है? वाक्यांश "व्यवस्था तक" इस कथन से मेल खाता है "आदम से मूसा तक"। वह संसार में सृष्टि से सिनाई तक समय के विषय बातें कर रहा है, इस्राएली रिवाज़ की व्यवस्थाओं और नियमों के औपचारिक घोषणा से पूर्व जिसने संभवत: दस आज्ञाओं को शमिल किया।

"व्यवस्था तक" का अर्थ है सिनाई पर इस्राएलियों को भिन्न-भिन्न व्यवस्थाएँ परमेश्वर की अपेक्षाओं के अनुरूप विस्तार से नहीं दिये जाने तक। पाप सिनाई से पूर्व अस्तित्व में था। यह कैसे नहीं होता? क्या झूठ बोलना, हत्या, व्यभिचार, और मूर्तिपूजा उससे पूर्व पाप नहीं था? संभवत: वे थे।

यह सत्य है कि सिनाई से पूर्व, मानवजाति को सामान्यत: परमेश्वर के केवल सीमित प्रकाशन मिलते थे, परन्तु वे स्पष्ट रूप से जिम्मेदारी को काफी समझते थे। परमेश्वर न्यायी है और किसी को गलत ढंग से दण्ड नहीं देता। जैसा पौलुस यहाँ पर संकेत करता है कि सिनाई से पूर्व के संसार में लोग मरे। मृत्यु सब पर से होकर गुजरी। यद्यपि उन्होंने स्पष्ट रूप से बताये आज्ञा के विरुद्ध पाप नहीं किया, तथापि उन्होंने वे पाप किया। प्रकृति में परमेश्वर का प्रकाशन था, जिसके प्रति उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और इस प्रकार वे दोषीदार बने। "उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य .... यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं" (रोमि० 1:20)

किस उद्देश्य को लेकर परमेश्वर ने स्वयं को "व्यवस्था" में अधिक पूर्णता के साथ प्रकट किया? रोमि० 5: 20, 21

सिनाई पर दिये गये निर्देश नैतिक व्यवस्था को शामिल करता था, जौभी कि यह उससे पहले अस्तित्व में था। फिर भी बाइबल के अनुसार, यह पहली बार था जब यह व्यवस्था लिखी गई और व्यापक रूप से ऐलान किया गया ।

जब इस्राएली ईश्वरीय अपेक्षाओं से स्वयं की तुलना करना शुरू कर दिया था, उन्होंने पाया कि वे बहुत अपर्याप्त निकले। दूसरे शब्दों में "अपराध" अधिक हुआ। वे अचानक अपने पाप के विस्तार को महसूस करने लगे। ऐसे प्रकाशन का उद्देश्य उन्हें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता को देखने में उन्हें मदद करना था, और उन्हें परमेश्वर द्वारा प्रदान किये जाने वाले मुफ्त अनुग्रह को ग्रहण करने हेतु प्रेरित करना था जैसे पहले ही जोर दिया गया था, पुराने नियम के विश्वास का सच्चा संस्करण विधि सम्मत नहीं था।

आपके देश की व्यवस्थाएँ सही और गलत के मानव अवधारणा को आप पर कैसे प्रकट करती है? यदि मानव व्यवस्थाएँ वह कर सकती हैं, तो परमेश्वर की अनंत व्यवस्था का क्या हाल है?

**बृहस्पतिवार** **नवम्बर 9**

**यीशु, दूसरा आदम**

"इसलिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे" (रोमि० 5: 18, 19)। कौन-सा फर्क हमें यहां पर दिया गया है? मसीह में हमें कौन-सी आज्ञा दी गई है?

मनुष्य के तौर पर, हमने आदम से कुछ नहीं पर मृत्यु का दण्ड पाया। तथापि मसीह आया और उस जमीन पर होकर चला, जहाँ आदम गिरा, मनुष्य की ओर से हर परख को (दुख) सहा। उसने आदम के शर्मनाक असफलता और पतन को उद्धारा, और इस प्रकार हमारे एवजी (प्रतिनिधि) के तौर पर उसने हमें लाभप्रद स्थिति में खड़ा किया। इस प्रकार यीशु "दूसरा आदम" है।

"दूसरा आदम स्वतंत्र नैतिक एजेंट, अपने व्यवहार के लिये जिम्मेदार रहा। प्रचंड एवं सूक्ष्म भ्रामक प्रभावों से घिर कर, पहला आदम जिसने पापमय जीवन जीया, की अपेक्षा यीशु के प्रतिकूल स्थितियों का सामना किया। फिर भी पापियों के मध्य में रहकर उसने पाप की हर परीक्षा का प्रतिकार किया और अपने निष्कलंकता को बरकरार रखा। वह सदा से पाप रहित रहा।" - *एलेन जी० ह्वाईट कॉमेंटस्, द एस० डी०ए० बाइबल कॉमेंटरी, वाल्यूम 6, पेज 1074.*

रोमियों 5:15-19 में आदम के और मसीह के काम जिस प्रकार विरोधाभाषी हैं?

यहाँ पर विपरीतार्थ विचार को देखें: मृत्यु, जीवन; आज्ञाकारी, अवज्ञाकारी; निंदा, धार्मिकता; पाप, धार्मिकता। यीशु आया और आदम के सभी किये को मिटा डाला।

यह आकर्षक भी है कि शब्द 'उपहार' रोमियों 5: 15-17 में पांच बार आया है। पांच बार! तर्क साधारण है: पौलुस जोर दे रहा है कि पवित्रता अर्जित नहीं की जा सकती; यह उपहार के तौर पर आती है। यह कुछ वैसी है जिसकी योग्यता हम प्राप्त नहीं कर सकते, जिसके हम हकदार नहीं। अन्य उपहारों की तरह हमें पहुंचना है और उन्हें ग्रहण करना है, और इस मामले में, हम विश्वास के द्वारा इस उपहार का दावा करते हैं।

अब तक आपने कौन-सा उत्तम उपहार प्राप्त किया? इसे किस चीज से इतना सुंदर और इतना खास बनाया, यह यथार्थ कि यह एक उपहार था, इसके विपरीत जिसे आपने हासिल किया था आप इसे अधिक प्रशंसा योग्य समझते हैं? तथापि, वह उपहार कैसे उस उपहार से तुलना होगा जो यीशु में आपका है?

**शुक्रवार** **नवम्बर 10**

**अतिरिक्त विचार:** एलेन जी० ह्वाईट को पढ़ें: *"हेल्थ इन डेली लिविंग"*, पेज 470-472, *मिनिस्ट्री ऑफ लिविंग* में; *सेलेक्टेड मैसेजेस,* बुक 1 में *"ख्राइस्ट द सेन्टर ऑफ द मैसेज"*, पेज 383, 384; *"द टेम्पटेशन एण्ड फॉल"*, पेज 60-62, *पेट्रियार्क्स एण्ड प्रोफेटस्* में, *"जस्टीफिकेशन"*, पेज 712-714, *द एस०डी०ए० एनसाइक्लोपीडिया* में।

"अपने हृदय के हालात के विषय में" बहुत से लोग धोखे में हैं। वे महसूस नहीं होते कि स्वाभविक हृदय सभी चीजों से अधिक कपटी है, और निराशाजनक रूप से पापी है। वे उनकी स्वयं की धार्मिकता से स्वयं को लपेटते हैं, और अपने स्वयं के मानव चरित्र के स्तर को छूने में संतुष्ट होते हैं।" -*एलेन जी० ह्वाईट, सेलेक्टेड मैसेजेस, बुक 1,पेज 320.*

"एकमात्र आशा और उद्धार के तौर पर मसीह का प्रचार किया जाना बड़ी जरूरत है। जब विश्वास के द्वारा धार्मिकता के सिद्धांत को पेश किया गया ..., यह बहुतों के पास ऐसे आता है जैसा पानी प्यासे यात्री के पास आता है। यह विचार कि मसीह की धार्मिकता हम में आरोपित की जाती है, हमारी ओर से किसी सद्‌गुण के कारण नहीं वरन् परमेश्वर की ओर से मुफ्त उपहार के तौर पर, एक अनमोल विचार प्रतीत हुआ।" - *पेज 360.*

"जो उस आने वाले का चिह्न है (5:14)। किस प्रकार आदम मसीह का नमूना था? जैसे आदम अपने वंशजों के लिये मृत्यु का कारण बना, यद्यपि उन्होंने वर्जित पेड़ में से नहीं खाया, अत: मसीह उनके लिये धार्मिकता का वितरक बना है जो उसके हैं, यद्यपि पापी मनुष्य ने धार्मिकता खुद हासिल नहीं की है; परन्तु यीशु ने क्रूस द्वारा सभी मानव के लिये हासिल (धार्मिकता) की है। आदम के पाप का नमूना हम में है, क्योंकि हम मरते हैं मानो कि हमने पाप किया था, जैसे उसने किया। मसीह का नमूना हम में है, क्योंकि हम जीवित हैं मानो कि हमने सभी धार्मिकता को पूरी की थी, जैसे उसने किया।" - *मार्टिन लूथर, रोमियों पर टिप्पणी, पेज 96,97.*

**विचार-विमर्श के लिये प्रश्न:**

- एलेन जी० ह्वाईट की प्रस्तुत उद्धरण से हम क्या समझते हैं: "परमेश्वर के वचन के गहनत्तम अध्ययन की जरूरत है; खास कर हमारे काम के इतिहास में दानिएल और प्रकाशित वाक्य के ध्यान होने चाहिए जैसे पहले कभी नहीं थे। रोमी सामर्थ्य और पोपीय कार्य काल के संबंध में, थोड़ी ही पंक्तियों में हमें हो सकता है कम ही कहना पड़े; परन्तु परमेश्वर के पवित्र आत्मा की प्रेरणा से भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों ने जो लिखा है हमारा ध्यानाकर्षण करना चाहिए।" - *एलेन जी० ह्वाईट,एवन्जेलिज्म, पेज 577.*
- मृत्यु की वास्तविकता के विषय सोचें, क्या यह जीवन के लिये है या जीवन का अर्थ। बहुत से लेखकों एवं दार्शनिकों ने जीवन की अंतिम व्यर्थता के कारण शोक जताया है क्योंकि यह अनंत मृत्यु में समाप्त हो जाता है। हम मसीहियों के तौर पर उन्हें कैसे उत्तर देते हैं? उस व्यर्थता के लिये एकमात्र जवाब क्यों यीशु में हमारी आशा है?
- जिस प्रकार आदम का पत्तन हम सबों पर एक पतित स्वभाव को थोपा, यीशु की विजय अनंत जीवन की प्रतिज्ञा हम सबों को देता है जो इसे विश्वास के द्वारा ग्रहण करता है इसमें कोई अपवाद नहीं। इस प्रकार के अद्‌भुत व्यवस्था ठीक वहां पर हमारे लिये है, स्वयं के लिये इसे उत्सुकतापूर्वक दावा करना और पहुंच बनाने से लोगों को क्या रोकता है? हम में से प्रत्येक कोई उन्हें जो बेहतर समझ हेतु खोज कर रहे हैं, कैसे मदद कर सकते हैं। वह जिसे मसीह प्रदान करता है और वह जिसे उसने उनके लिये किया है?